

[डा. अनिल कुमार साहनी]

जानते हैं। सर, मैं आपके माध्यम से सरकार के समक्ष यह बात रखना चाहता हूँ कि मुजफ्फरपुर में पिलखी नामक जिस ग्राम को मैंने गोद लिया है, उस ग्राम के एक किसान विजय साहनी जी ने यूके बैंक से लोन लिया और वहाँ पर अपने कागज़-पत्र जमा कर दिए। सन् 2011 में उनका निधन हो गया। सन् 2006 में उन्होंने बैंक से ऋण लिया और सन् 2011 में उनका निधन हो गया। उनको ऋण वसूली के लिए तंग और तबाह किया गया। उनके परिवार के लोगों ने बैंक में जाकर पूरा पैसा जमा कर दिया। पूरा पैसा जमा करने के बाद बैंक से original कागज़ और रसीद, जो उन्होंने जमा की थी, आज एक बरस हो गया है, उनके परिवार को दौड़ाया जा रहा है, उनका पोता, राजेश कुमार परेशान है, वह उस बैंक में दौड़ते-दौड़ते थक गया है, लेकिन उसको मूल कागज़ और रसीद आज तक वापस नहीं की गयी। एक ओर बैंक ऋण वसूली के लिए किसान को परेशान करते हैं और दूसरी ओर जब किसान पैसा वापस कर देता है, अपना ऋण चुकता कर देता है, तो उसको उसके कागज़-पत्र समय पर क्यों नहीं दिए जाते? वह किसान अपनी किसानी करे या अपने कागज़-पत्र वापस पाने के लिए बैंक के चक्कर लगाए? हमारे देश के किसान अभी भी अशिक्षित हैं। लोग उन्हें कहते हैं कि अगर आपके original कागज़ नहीं मिलेंगे तो आपकी ज़मीन खत्म हो सकती है, वे आपकी ज़मीन को नीलाम करा सकते हैं। मैं सरकार की ओर से ऐसी व्यवस्था चाहता हूँ कि अगर किसी कारणवश कागज़ को बैंक ने खो दिया है, कागज़ को बरबाद कर दिया है तो उसके मूल कागज़ की certified copy वहाँ से छुड़ाकर किसान को देने की व्यवस्था की जानी चाहिए, ताकि किसान परेशान न हो। इस व्यवस्था को बनाने के लिए सरकार को आगे आना चाहिए, ताकि बैंक की मनमानी न चले, किसान पर उसकी प्रताड़ना न चले। आज एक ओर हमारे बिहार के किसान बाढ़ और सुखाड़ से परेशान हैं, वहीं दूसरी ओर जो हमारे जल मजदूर हैं, जल किसान, मछुआ किसान हैं, वे भुखमरी के कगार पर हैं। यह सारी व्यवस्था लानी होगी, तब जाकर किसान खुशहाल होगा। ..(समय की घंटी).. इन्हीं शब्दों के साथ मैं सरकार से इस ओर ध्यान देने का अनुरोध करता हूँ।

श्रीमती विप्लव ठाकुर (हिमाचल प्रदेश): महोदय, मैं माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को संबद्ध करती हूँ।

श्री विशम्भर प्रसाद निषाद (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को संबद्ध करता हूँ।

श्री संजय सेठ (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को संबद्ध करता हूँ।

Need to provide facilities to pilgrims of Kailash-Mansarovar yatra

महंत शम्भुप्रसादजी तुंदिया (गुजरात) : उपसभापति महोदय, कैलाश मानसरोवर यात्रा विश्व की प्राचीनतम तथा सबसे कठिन तीर्थ यात्रा है। इसका उल्लेख भारत में भी मिलता है। यह जैन, बौद्ध तथा सभी हिन्दुओं के लिए अत्यंत श्रद्धा का स्थान है। जैन समाज में प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव जी की निर्वाणस्थली भी यहीं पर है। सर, बौद्ध श्रद्धालु तो कैलाश और मानसरोवर की दंडवत परिक्रमा भी करते हैं। मानसरोवर दुनिया की सबसे ऊँची और अमृत समान एक झील भी है और कैलाश पर्वत की महिमा ऐसी है कि कम्युनिस्ट विचार वाली चाइनीज सरकार भी इसकी

पवित्रता की रक्षा कर रही है। इस महान तीर्थस्थल की यात्रा के लिए आदिकाल से भारतीय तीर्थयात्री जीवन में एक बार अवश्य जाना चाहते हैं। यहां जाने पर सात पीढ़ियों के पुरखों का आशीर्वाद मिलता है, ऐसा लोगों का विश्वास भी है। यहां साक्षात् शिव के दर्शन भी होते हैं। सर, मैं सदन के माध्यम से अवगत कराना चाहता हूं कि सौभाग्यवश हमारे माननीय प्रधान मंत्री आदरणीय श्री नरेंद्र मोदी जी के प्रयासों से नाथुला से ही इस यात्रा पर जाने का एक नया, सुगम रास्ता खुल गया है, जिसके लिए देश के कोटि-कोटि तीर्थ यात्री उनको हार्दिक धन्यवाद देते हैं और उनका आभार प्रकट करते हैं।

सर, अभी तक जो मार्ग था, वह उत्तराखंड से था, जिसमें 20 दिन का समय लगता था और काफी किलोमीटर तक पैदल भी जाना पड़ता था। अब मोदी जी की प्रेरणा से खुले हुए नए नाथुला मार्ग से अधिक आयु वाले एवं अशक्त व्यक्ति भी आसानी से तीर्थ यात्रा कर सकते हैं, क्योंकि नाथुला से पैदल नहीं जाना पड़ता है। वाहनों के रुकने की, दर्शन करने की सुंदर व्यवस्था है।

सर, मैं यह बात बताना चाहता हूं कि हम अनुसूचित जाति, पिछड़े वर्ग के गरीब लोग इस यात्रा को नहीं कर सकते हैं, क्योंकि प्रति यात्री लगभग दो लाख रुपये का खर्च होता है। सदियों से हमें वंचित रखा गया है और हिन्दू दलित और बौद्ध दलित इस पवित्र यात्रा से वंचित रह जाते हैं।

सर, मैं सरकार से विनती करता हूं कि वह अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, वनवासी वर्ग के हिन्दुओं को इस यात्रा के लिए विशेष अनुदान एवं सहायता प्रदान करे। इस तीर्थ यात्रा के लिए एक क्रांतिकारी कदम उठाया है, पूरा हिन्दू समाज इसके लिए आपका कृतज्ञ और ऋणी रहेगा। ॐ नमः शिवाय।

श्री शमशेर सिंह मन्हास (जम्मू और कश्मीर): महोदय, मैं इस विषय से अपने आपको सम्बद्ध करता हूं।

श्री राम विचार नेताम (छत्तीसगढ़): महोदय, मैं भी इस विषय से अपने आपको सम्बद्ध करता हूं।

श्री दिलीपभाई पंडया (गुजरात): महोदय, मैं भी इस विषय से अपने आपको सम्बद्ध करता हूं।

श्री बसावाराज पाटिल (कर्णाटक): महोदय, मैं भी इस विषय से अपने आपको सम्बद्ध करता हूं।

श्री मेघराज जैन (मध्य प्रदेश): महोदय, मैं भी इस विषय से अपने आपको सम्बद्ध करता हूं।

डा. सी.पी. ठाकुर (बिहार): महोदय, मैं भी इस विषय से अपने आपको सम्बद्ध करता हूं।

श्री राम नारायण डूडी (राजस्थान): महोदय, मैं भी इस विषय से अपने आपको सम्बद्ध करता हूं।

श्री नारायण लाल पंचारिया (राजस्थान): महोदय, मैं भी इस विषय से अपने आपको सम्बद्ध करता हूं।

श्री विवेक गुप्ता (पश्चिमी बंगाल): महोदय, मैं भी इस विषय से अपने आपको सम्बद्ध करता हूं।

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री परषोत्तम रूपाला): महोदय, मैं भी इस विषय से अपने आपको सम्बद्ध करता हूं।

SHRI SURESH GOPI (Nominated): Sir, I too associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SOME HON. MEMBERS: Sir, we too associate ourselves with the matter raised by the hon. Member.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay. Yes, all those who associate, their names will be added. Now, Shri Mukul Roy.

Increasing number of rail accidents due to poor infrastructure

SHRI MUKUL ROY (West Bengal): Respected Sir, I thank you for giving me this opportunity to speak on this occasion. Indian Railways have travelled a long distance. In its illustrious journey, the Railways have witnessed several accidents some of which unfortunately occurred during my tenure as the Union Railway Minister. Even when I was the Railway Minister, I could not avoid railway accidents. I cannot forget those days. But it is a matter of deep agony, that huge increase in the number of casualties, since the last few months, is an upcoming trend.

On 22nd January, 2017, about 27 people were killed and 36 more badly injured by derailment of the Jagdalpur Bhubaneswar Express. The 2016 Indore-Patna Train tragedy is unforgettable. There were casualties of more than 150 lives. In Waltair Division, 41 people lost their lives. In four major train accidents in the last three months, over 200 people died and several hundreds were injured.

The Railway Administration is nowadays not engaged and not properly giving its time to core working of the Railways. Sir, I can remember, at that time I was a Member of this House, when Mamataji proposed the Rail Budget. The then Leader of the Opposition, our hon. Finance Minister, opposed the Rail Budget with the plea that the Railways has shifted from its core working group to other areas. Sir, Railway Administration nowadays is not engaged in core work of Railways. There is excessive focus on other issues like *Swachh Bharat*, tweeting, Rail *Shivir*, activities on cultural events/railway station renovation programmes/competitions etc. which are diluting core functioning of Railways and reducing railway safety.

Employees are not focussing on railway safety work; rather their duties are diverted to other activities, neglecting public safety. Our hon. Prime Minister announced implementation of innovative ideas by conducting camps, engaging gang man to General Manager. The outcome of such idea turned into railway platforms being used for marriage ceremony. This is the innovative idea from gang man to General Manager.

Derailments are mainly caused by defective railway track, rail fractures, lack in